



ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 21 अंक 2

कुल पृष्ठ-8

23 से 29 अप्रैल, 2026

दयानन्दाब्द 202

सृष्टि सम्वत् 1960853127

सम्वत् 2083

वै.शु.-07

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार का 123वां वार्षिकोत्सव समारोह
दिनांक 13 अप्रैल, 2026 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न
कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की
श्री मदन कौशिक 'कैबिनेट मंत्री उत्तराखण्ड सरकार' मुख्य अतिथि,
स्वामी यतीश्वरानन्द सरस्वती जी पूर्व मंत्री अतिविशिष्ट अतिथि
एवं स्वामी आदित्यवेश जी विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में पधारे
श्री आदेश चौहान विधायक की रही गरिमामयी उपस्थिति
गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा ने किया अतिथियों का स्वागत



आर्य विद्या सभा हरिद्वार के अन्तर्गत संचालित एवं अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय हरिद्वार का 123वां वार्षिकोत्सव समारोह 13 अप्रैल, 2026 को बड़े उत्साह एवं भव्यता के साथ गुरुकुल प्रांगण में आयोजित किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी यतीश्वरानन्द जी पूर्व कैबिनेट मंत्री उत्तराखण्ड सरकार, श्रीमान् मदन कौशिक जी, माननीय कैबिनेट मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार, स्वामी आदित्यवेश जी, श्री



आदेश चौहान विधायक, स्वामी विश्वानन्द जी आदि संन्यासी व नेता कार्यक्रम में पधारे।

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा ने सभी अतिथियों का स्मृति चिन्ह एवं शॉल देकर स्वागत किया। कार्यक्रम में मंच का संचालन डॉ. योगेश शास्त्री एवं व्यवस्था का दायित्व श्री विजेन्द्र शास्त्री प्रधानाचार्य व श्री अशोक कुमार ने बड़ी कुशलता के साथ किया। प्रातः 09.00 से 10.00 बजे तक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें आचार्य विजेन्द्र एवं श्री अश्विनी जी ने सपत्नीक यजमान

शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य समाज देवबन्द, नंगली में वैदिक सत्संग एवं पारितोषिक वितरण समारोह हुआ सम्पन्न
संस्कारवान युवा ही राष्ट्र को उन्नति के रास्ते पर ले जा सकते हैं - स्वामी आदित्यवेश

यज्ञ हमें दान, देव पूजा एवं संगतिकरण सीखाता है - मधुर प्रकाश

ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर गांव में चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया जाएगा - चौ० विपिन आर्य

दिनांक 19 अप्रैल 2026 को देवबंद क्षेत्र के ग्राम नंगली महनाज स्थित आर्य समाज में वैदिक सत्संग एवं पारितोषिक वितरण समारोह का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली से पधारे सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी तथा मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मधुर प्रकाश जी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक यज्ञ से हुआ, जिसमें बच्चों, महिलाओं एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों ने आहुति प्रदान कर वातावरण को आध्यात्मिक एवं प्रेरणादायी बना दिया।

अपने उद्बोधन में स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि "संस्कारवान युवा ही राष्ट्र को उन्नति के पथ पर अग्रसर कर सकते हैं।" उन्होंने युवाओं से अनुशासन, संयम एवं राष्ट्रसेवा के मार्ग पर चलने का आह्वान किया। वहीं डॉ. मधुर प्रकाश जी ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि "यज्ञ हमें दान, देवपूजा एवं संगतिकरण की शिक्षा देता है," जो समाज में एकता और सहयोग की भावना को सुदृढ़ करता है।

इस अवसर पर चौधरी विपिन आर्य जी ने घोषणा की कि



ग्रीष्मकालीन अवकाश में ग्राम में चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया जाएगा, जिसमें बच्चों एवं युवाओं को नैतिक शिक्षा तथा वैदिक संस्कार प्रदान किए जाएंगे।

कार्यक्रम में विपिन आर्य, अमरीश आर्य एवं प्रभात आर्य जी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए आर्य समाज की गतिविधियों को समाजोपयोगी बताया। इसके उपरान्त पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित हुआ, जिसमें दैनिक शाखा में नियमित रूप से उपस्थित

रहने वाले युवकों को खेल वेशभूषा प्रदान कर सम्मानित किया गया।

समारोह में बड़ी संख्या में ग्रामीणों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अंत में दैनिक शाखा के संचालक आकाश आर्य जी ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित जनों का आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम की सफलतापूर्वक सम्पन्नता की घोषणा की। आयोजकों द्वारा सभी अतिथियों का सम्मान भी किया गया।

इस अवसर पर श्री प्रवीन आर्य, श्री मुकेश आर्य, प्रधान श्री अजब सिंह आर्य, श्री राजबीर आर्य, श्री ईश्वर आर्य, श्री अमरीश आर्य, श्री देवव्रत आर्य, श्री महोपाल आर्य, श्री जनकवीर आर्य, श्री नीटू आर्य एवं श्री प्रभात आर्य सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम में बच्चों की भी उत्साहपूर्ण सहभागिता रही, जिनमें सर्वश्री अनंत आर्य, तेजस आर्य, सानिध्य आर्य, उदय आर्य, वीर आर्य, आदि आर्य, गोरंश आर्य, परमजीत आर्य, आकाश आर्य, अथर्व आर्य, वासु आर्य, आरिस आर्य, अर्श आर्य, अंश आर्य एवं अनिक आर्य प्रमुख रूप से शामिल रहे। सभी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सक्रिय योगदान दिया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वैदिक धर्म मानवता के कल्याण की बात करता है

— डॉ. प्रवेश सक्सेना

एक उर्दू कवि ने कहा है ‘आदमी को मयस्सर नहीं इंसां होना।’ वास्तव में इंसानियत, मनुष्यता या मानवता आज नितान्त दुर्लभ हो गई है। इस भौतिकतावादी युग में सांसारिक वैभव, ऐशो-आराम के साधनों को जुटाने की दौड़ में शामिल मनुष्य कब अपने स्वभावगत मानवीय गुणों को तिरस्कृत कर बैठता है उसे स्वयं पता नहीं रहता। प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्धा उसके मन को स्वार्थ के संकीर्ण घेरे में आबद्ध कर द्वेष-ईर्ष्या से भर देती है। ऐसे में दया, करुणा, तथा हृदय की उदारता जैसे स्वाभाविक सहज-सरल मानवीय मूल्य तिरोहित हो जाते हैं।

एक ओर आज है आर्थिक नीतियों का ‘उदारवाद’ और निरन्तर विकसित होते दूरसंचार के माध्यम जो ‘वैश्वीकरण’ को सिद्ध करते हैं। परन्तु दूसरी ओर है राष्ट्र-राष्ट्र में, व्यक्ति-व्यक्ति में बढ़ती हुई भावनात्मक दूरियाँ। अनुदारता एवं अविश्वास के वातावरण में पनपता जाता है हिंसात्मक आतंकवाद। बुद्धिजीवी मानते हैं विश्व के सामने यह महासंकट है और इससे उबरने के लिए आध्यात्मिकता की खुराक बहुत जरूरी है। पर विभिन्न आध्यात्मिक दर्शन तथा धर्मों के नाम पर भी कोई छोटे-मोटे वितण्डावाद नहीं, अच्छे-खासे युद्ध हो जाते हैं, जिनकी विभीषिका से मानवता ही सबसे अधिक लहुलुहान होती है।

ऐसी स्थितियों में वैदिक धर्म का ‘मानवतावाद’ बहुत प्रासंगिक प्रतीत होता है क्योंकि यहाँ जाति, वर्ण, धर्म और राष्ट्र के नामों के घेरे नहीं हैं, सर्वत्र मनुष्य और मनुष्य धर्म की बात है। वेद स्वयं कहते हैं वेद की शिक्षाएं मानवकल्याण के लिए हैं।

यथा भर्गस्त्वर्ती वाचम् आवदानि जनोऽनु।

अथर्ववेद 6.69.1

अर्थात् मैं गरिमापूर्ण वाणी मानवता के समूहों के लिए बोलूँ। इसी तरह यजुर्वेद (26.18) में विश्वमानुषों के हित के लिए कल्याणमयी शिक्षा देने की बात कही गई है। एक और मंत्र (यजु. 26.2) तो स्पष्ट घोषणा करता है कि वैदिक वाणी सम्पूर्ण मानवता को सम्बोधित करती है जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र समाहित हैं। सबकी समान समृद्धि से ही वास्तव में सम्पूर्ण समाज, राष्ट्र और विश्व या मानवमात्र की समृद्धि सम्भव है। वेद के मानव धर्म में छोटे-बड़े छूत-अछूत, ज्येष्ठ-कनिष्ठ का कोई भाव है ही नहीं (ऋग्वेद 5.60.5)। यहाँ सभी परस्पर भ्रातृभाव के बन्धन में बंधे हुए हैं तथा सब मिलकर सौभाग्य के लिए प्रयत्न करते हैं। अथर्ववेद (19.6.2.1) स्पष्ट आदेश देता है शूद्र और आर्य सबका प्रिय, सबका कल्याण देखें। यही नहीं इस संदर्भ में अजनबी व अपरिचित तथा परिचित दोनों को अपराध मुक्ति के लिए प्रार्थनाएं की गई हैं (ऋ. 5.85.7)।

वेद बार-बार स्वीकार करते हैं कि ‘ईश्वर सबका सांझा है, सामान्य है - ‘समानम् इन्द्रम् अवसे हवामहे’ (ऋ. 8.99.8)। सभी मानवी प्रजाएं इन्द्र की स्तुति करती हैं (ऋ. 8.46.12) अथर्ववेद (4.16.8) के अनुसार ईश्वर हमारी भूमि का भी उतना अपना है जितना विदेशी भूमि का।

वैदिक ज्ञान को आत्मसात करते हुए तथा एक सत् या परमसत्ता की अद्वितीयता को स्वीकारते हुए मनुष्य अधिकाधिक उदार होता जाता है। उसकी दृष्टि व्यापक होती है, दृष्टिकोण दूरदर्शी होता है। यह उदारता मनुष्य को परिवार, जाति, समाज, देश एवं सम्पूर्ण धरा के व्यक्तियों से जोड़ती है, आत्मीयता को पुष्ट करती है। जन-जन के प्रति आत्मीयता जहाँ होगी वहाँ द्वेष-घृणा के लिए स्थान बचता ही नहीं। पर वैदिक मानव धर्म यदि मानवकल्याण तक सीमित रहता तो शायद उसे संकुचित ही कहा जाता पर वह तो ‘मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे’ (यजे. 36.18) सभी जीवित प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने का पक्षधर है और विनिमय में सभी प्राणियों की मैत्री का इच्छुक भी है। और मित्रता का भाव जहाँ हो वहाँ हमेशा कल्याण, स्वस्ति और शान्ति विराजती है। तभी तो वेद के शान्तिपाठ में यदि तीनों लोकों, जल, औषधियों, वनस्पतियों की शान्ति काम्य है तो साथ ही सम्पूर्ण वैदिक जनों (विश्वे देवाः), ज्ञान की शान्ति की इच्छा है। बौद्धिकता और ज्ञान यदि सर्वकल्याण भाव से प्रेरित नहीं होता तो अशान्ति का कारण बन जाता है। वैज्ञानिक उन्नति तथा आणविक शक्ति का प्रचार-प्रसार आज के मानव को शान्ति

नहीं दे पाया है और ‘शान्ति का भ्रम पैदा कर सकता है पर वह वास्तविक शान्ति नहीं है। सच्ची शान्ति में आनन्द निहित रहता है। विश्व मैत्री के स्तर पर वेद में बहुत बार ‘विश्वामानुष’ शब्द का प्रयोग हुआ है जो मानवता की सम्पूर्णता को भी अभिव्यक्त करता है। विश्वमैत्री तथा विश्वशान्ति के उदात्त सिद्धान्तों से परिवेश की रक्षा सहज रूप में हो जाती है। तब प्रदूषण की समस्या से अलग से जूझने की जरूरत ही नहीं रहती।

‘मित्र’ का अर्थ होता है जो ‘कष्ट’ से उबारे। इसीलिए मित्रता में स्नेह, करुणा व कल्याण के भाव भरे होते हैं। घृणा-द्वेष का यहाँ कोई काम ही नहीं रहता। तब मनुष्य सबकी उन्नति में हर्षित होता है तथा दुःखीजन की सहायता करता है। ऐसी मित्रता ही निर्भयता का अभयता का संसार रचती है। तब सर्वत्र अभय का संचार होता है तथा सारी दिशाएं ‘मित्र’ बन जाती हैं। ‘सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु’ (अथर्ववेद 19.15.6) जैसे एक घोंसले में लौटकर दिनभर उड़ान भरते पक्षी को आश्रय, विश्रान्ति व आनन्द मिलता है वैसे ही शान्ति, निर्भयता से परिपूर्ण परिवेश के कारण पूरा विश्व एक नीड़ बन जाता है, घोंसला बन जाता है - ‘यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्’ (यजुर्वेद 32.8)।

मानव का चिरन्तन चरम उद्देश्य है संशय से, मोह से, शोक से मुक्ति और यजुर्वेद (40.6.7) हमें सिखाता है जब हम जड़-चेतन को ईश्वर में तथा ईश्वर को सभी विषयों में व्यापक मान लेते हैं, समझ लेते हैं तो हमारे संशय मिट जाते हैं। आत्मा की दिव्य अनुभूति जब कण-कण में होने लगती है तब मोह, शोक नष्ट हो जाते हैं।

अब यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या यह विश्वमैत्री, विश्वबन्धुत्व अथवा सर्वत्र समानानुभूति के भाव, मात्र सैद्धान्तिक हैं या इन्हें व्यवहार में भी उतारा जा सकता है? वेद का उत्तर बार-बार हाँ है। ‘विश्व मानुष’ की तर्ज पर यहाँ एक शब्द है ‘विश्वभोजस्’ जिसका अर्थ है विश्व के भोग्य पदार्थ सबके लिए हैं, कुछेक के लिए नहीं है। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद को निर्देश है - ‘केवलाधो भवति केवलादी’ (ऋ. 10.117.6) - ‘अकेले खाने वाला पापी होता है।’ यजुर्वेद (40.1) का कथन है - ‘तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्’ अर्थात् त्याग करके उतना ही भोग करना चाहिए जितना आवश्यक है। दूसरे के धन का लोभ नहीं करना चाहिए। महात्मा गाँधी ने भी कहा था यह पृथ्वी सबकी जरूरतों को पूरा कर सकती है पर किसी एक के भी लालच को नहीं।

इस धरती को हमें इसके सुखों, दुःखों, संघर्षों के साथ स्वीकार करना चाहिए तथा इस पर स्वामित्व या अधिकार भाव से रहना जरूर चाहिए। परन्तु इस अधिकार भाव से अहं नहीं पनपना चाहिए। यह भी ध्यान में रखना होगा कि यह किसी जाति विशेष या समूह विशेष के लिए नहीं है यहाँ विभिन्न जातियाँ, विभिन्न समूह निवास करते हैं जो विभिन्न भाषाएं बोलते हैं, विभिन्न पूजा पद्धतियाँ भी अपनाते हैं। परन्तु तब भी ‘मानवता’ एक सामान्य गुण है जिसका विकास हरेक को करना चाहिए। वैदिक धर्म सम्पूर्ण पृथ्वी को एक मानकर उसके वासी मनुष्यों को उसका पुत्र मानता है। पृथ्वी-पुत्रों को यदि पृथ्वी के वरदान सहज रूप में उपलब्ध है तो उनके कर्तव्य भी हैं उस धर्मपालन के जिससे पृथ्वी का धारण किया जाता है।

सत्यं बृहद् ऋतम्, उग्रम् दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति’ (अथर्ववेद 2.11) अर्थात् सत्य, ऋत, क्षत्र, दीक्षा, तप और ब्रह्म तथा यज्ञ पृथ्वी का संरक्षण करते हैं। ये सब सार्वभौमिक या वैश्विक सत्य हैं या मूल्य हैं जो किसी एकमत या धर्म (सम्प्रदाय) पर लागू नहीं होते। मानव मात्र के लिए ही है ये सब। वैसे भी ‘धर्म’ शब्द आज के युग में सम्प्रदाय या मत का वाचक हो गया है। जबकि ‘मूल’ अर्थ में ‘धारणात् धर्म’ - धारण करने से धर्म होता है। ‘सत्य’ को लगभग अन्य सभी विश्वास भी महत्व देते हैं। व्यक्तिगत या सामाजिक स्तर पर सत्य के पालन से राष्ट्र संरक्षण होता है। तब ‘भ्रष्टाचरण’ की समस्या ही नहीं रहती। ‘ऋत्’ वेद में नैतिक व्यवस्था व विश्वव्यवस्था दोनों को अभिव्यक्त करता है। कहना न होगा ‘व्यवस्था’ जीवन को

संवारती है। दीक्षा ब्रह्मचर्य के उस भाग का नाम है जब गुरु-शिष्य ज्ञान के विकास के लिए मिल-जुलकर प्रयत्न करते हैं। इसी प्रकार ‘तप’ नाम है निरन्तर परिश्रम करने का गतिशील रहने का। ब्रह्मा है ज्ञान जिसके अन्तर्गत विविध विद्यार्जन तो आता ही है सबसे प्रमुख ‘अध्यात्म’ भी समाहित रहता है। वैदिक धर्म की सबसे बड़ी विशेषता है कि यहाँ धर्म के नैतिक रूप को अधिक महत्त्व दिया गया है।

कर्मकाण्ड को उतना नहीं। यही कारण है ‘यज्ञ’ इस श्रृंखला में सबसे अन्त में तथा ‘सत्य’ सबसे पहले ‘यज्ञ’ मात्र कर्मकाण्ड नहीं है। समर्पण भाव ही यज्ञ है। मानवीय गुणों में से सत्य, ऋत, ज्ञानादि जब विकसित हो जाते हैं तो नम्रता जन्मती है और मनुष्य सबके प्रति समर्पणभाव से कर्म करने को प्रस्तुत रहता है।

वैदिक धर्म बहुत प्रगतिशील है। अकर्मण्यता के लिए यहाँ कोई स्थान ही नहीं है। इसीलिए मात्र सैद्धान्तिक कहकर इसे टाला नहीं जा सकता। पूर्णतः व्यावहारिक जीवन निरन्तर आगे बढ़ने का संदेश देता है। जीवन संघर्षों में जूझते रहने का नाम वैदिक धर्म है। ‘इन्द्र’ भी अर्थात् ईश्वर भी गतिशील व्यक्ति का साथ देता है।

इसीलिए 12वीं सदी में यदि हम वैदिक धर्म की गतिशीलता, नैतिकता और मानवता को लेकर चलेंगे तो आज के संकटों, महासंकटों से अवश्य छुटकारा मिलेगा। हलचलों भरे जीवन की विश्रान्ति के लिए वेद का मानव धर्म आज नितान्त प्रासंगिक है तथा विश्रान्तिदायक है। ऋग्वेद का निम्न मंत्र काव्यात्मक रूप में मनुष्य को ‘मनुर्भव’ का संदेश देता है -

तन्तु तन्वन् राजसो भानुमन्विहि,

ज्योतिष्मतः पथोरक्ष धिया कृतान्।

अतुल्वलं वयता जोगमुवामपो,

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्। (ऋ. 10.55.6)

अर्थात् हे मनुष्य तू अपने जीवन तन्तु का विस्तार करता हुआ लोकमात्र के प्रकाशक को प्राप्त हो। (इसके लिए) तू बुद्धि से ज्योतिष्मान मार्गों की रक्षा कर। स्तुति शब्द करने वाले विद्वानों के उलझन रहित कर्म रूप वस्त्र बुन। तू मनु अर्थात् मननशील मनुष्य बन। अपने को देवश्रेणी का जन बना। (मन्त्रार्थ डॉ. कृष्ण लाल)।

यह मन्त्र वास्तव में वैदिक मानवतावाद का सार है। मनुष्य का अस्तित्व तीन श्रेणियों में विभक्त है - (1) पशुस्तर पर - जहाँ ‘आहारनिद्राभयमैथुन’ में ही लीन रहता है वह। तथा आत्मिक विकास की बात दूर रही उसे अपनी बौद्धिक और मानसिक शक्तियों पर विश्वास ही नहीं होता। इसलिए जीवन व्यर्थ हो जाता है। कई बार उचित अवसर न मिलने पर भी यह स्थिति होती है। (2) मनुष्य स्तर पर - व्यक्ति यथाशक्ति पारिवारिक पृष्ठभूमि की सहायता पाकर स्थूलता से ऊपर उठ सूक्ष्म मानवीय मूल्यों को सीखकर जीवन में उतारने की सोचते हैं। (3) उच्चतम स्तर है जब मानव दिव्यता अंगीकार कर दिव्य जनों की श्रेणी में आ जाता है। मानवमात्र के अस्तित्व का लक्ष्य ‘देवत्व’ की सिद्धि है। देव क्या है? देव वह है जो दान देता है, ज्ञान से तेजस्वी होता है और दूसरों के दीप अपने ज्ञान-प्रकाश से ज्योतित करता है।

यहाँ ध्यातव्य है कि वेद व्यक्ति के विकास को महत्व देता जरूर है पर यह विकास परिवार, समाज और विश्व के विकास के योगदान में लगना आवश्यक है। सम्पूर्ण मानव जाति को गहराई से देखकर, उसमें विद्यमान सूत्र को देखकर, व्यक्ति जब समष्टि में समा जाता है तभी वैश्विक कल्याण सधता है। ऋग्वेद के अन्तिम सौमनस्य सूक्त का मुख्य स्वर ‘समान मन वाला’ होकर जिएं यही है। सबका संकल्प, सबके हृदय व सबके मन एक समान हों तथा सबके कार्य परस्पर संगठित हों।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

यही वैदिक मानवतावाद की प्रार्थना है।

- ए. एन.-7 बी, शालीमार बाग, दिल्ली

स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज की भूमिका

—सुरेन्द्र सिंह कादियाण

विश्व में भारत 'सोने की चिड़िया' नाम से प्रसिद्ध था अतः विश्व के हर महान् विजेता का स्वप्न भारत को लूटने का रहा है। लूट का यह सिलसिला सिकन्दर महान् के भारत आक्रमण से स्पष्ट रूपेण इतिहास में मिलना शुरू होता है। यूनानियों के बाद हूण, शक, पठान, मुस्लिम आदि आक्रमणकारी बन कर आये फिर डच, पुर्तगाली, फ्रांसीसी व अंग्रेज भारत को लूटने के इरादे से आये। आज भी यद्यपि कहने को भारत आज़ाद है लेकिन उपनिवेशवादी शक्तियाँ आज भी उदारीकरण, भूमण्डलीकरण, निजीकरण के नाम पर भारत में अपने पाँव पसारें बैठी हैं और ये राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, धार्मिक व सामाजिक सभी क्षेत्रों में शोषण करने को आतुर हैं भले ही शोषण के तरीके बदल गये हों, उनका रूप परिवर्तन हो गया हो।

प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन पर जब विचार होगा तो उसमें १८५७ के गदर के कारणों, घटनाओं व परिणामों पर तो विचार होगा ही इसके साथ-साथ यह जानना भी आवश्यक होगा कि गदर के क्रम में देश में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की जो लहर पैदा हुई और स्वाधीनता का दूसरा दौर शुरू होने पर अन्ततः हमें जो आज़ादी मिली क्या उस आज़ादी ने देश के एक आम नागरिक के लिए रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा व न्याय-इन सात मूलभूत सुविधाओं को जुटाने में कुछ अहम भूमिका निभाने में सफलता अर्जित की है? यदि इस सवाल का उत्तर नकारात्मक मिलता है तो यह स्थिति हमें यह सोचने पर विवश करेगी कि क्या देश में स्वाधीनता का तीसरा दौर शुरू नहीं होना चाहिए?

भारत विविधताओं का राष्ट्र रहा है और यह विविधता सांस्कृतिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है बल्कि राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक व दार्शनिक सभी क्षेत्रों में देखी जा सकती है। स्वाधीनता आन्दोलन के विश्लेषण या मूल्यांकन में भी यह विविधता दृष्टिगोचर होती रही है। स्वाधीनता आन्दोलन के प्रथम दौर को अलग-अलग नज़रिये से देखने की प्रवृत्ति इतनी अधिक विकसित हो गई है कि उसे लेकर अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ उत्पन्न होने लगी हैं। कम्युनिस्ट अपने नज़रिये से, धर्मनिरपेक्षतावादी कांग्रेस अपने नज़रिये से, समाजवादी अपने नज़रिये से, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने नज़रिये से, सिख व ईसाई अपने नज़रिये से, दलित व मुस्लिम अपने नज़रिये से इस स्वाधीनता आन्दोलन का विश्लेषण या व्याख्या या मूल्यांकन कर रहे हैं। इनका उद्देश्य मात्र अपने-अपने दर्शन, आन्दोलन व संघर्ष को प्रेरणा, ताकत, प्रासंगिकता, प्रामाणिकता देना है जिससे कि उनका अस्तित्व बना रहे, बचा रहे। अतः इस स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि स्वाधीनता आन्दोलन के प्रथम दौर का विश्लेषण, व्याख्या और मूल्यांकन किसी वाद विशेष से मुक्त होकर, किसी एकाकी व संकीर्ण विचारधारा से सर्वथा मुक्त होकर, राष्ट्र के व्यापक हितों को दृष्टिगत रख कर किया जाये। यह काम जितनी आसानी से, निष्पक्षता से, प्रामाणिकता से और विश्वसनीयता से आर्यसमाज से प्रभावित कोई चिन्तक कर सकता है वैसा कोई अन्य नहीं कर सकता। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आर्य समाज का सर्वाधिक बल सत्य के प्रति आग्रही होना है। दूसरे, उसका मानवीय और राष्ट्रीय पक्ष अत्यंत प्रबल एवं प्रबुद्ध रहा है। तीसरे, वह किसी साम्प्रदायिक आग्रह का पक्षधर नहीं रहा है। धार्मिक सामाजिक और शैक्षिक क्षेत्र में उसके विचार और गतिविधियाँ जो भी रही हैं वे किसी भी प्रकार के वाद, पूर्वाग्रह और प्रतिबद्धता से मुक्त रही हैं और हर वर्ग के लोगों ने चाहे वे देशी रहे हों या विदेशी उसका लोहा माना है।

१८५७ का गदर वस्तुतः एक असाधारण स्वाधीनता संग्राम था जो एक विदेशी ताकत के खिलाफ मात्र मुस्लिम नवाबों व हिन्दू रजवाड़ों ने नहीं लड़ा था बल्कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के काले कारनामों, शोषणकारी नीतियों और दमनकारी व्यवहार से प्रताड़ित, हताश व दुखी किसानों व श्रमिकों, सैनिकों व दलितों ने भी इसमें अपनी भागीदारी सक्रियता से निभाई थी। शहरी, ग्रामीण और आदिवासी सभी क्षेत्रों के लोग इसमें शरीके सफर रहे। महिलाओं, नौजवानों, बच्चों व बूढ़ों की भागीदारी भी बराबर बनी रही। गृहस्थी और संन्यासी सभी इस संग्राम में कूदे थे। इस स्वाधीनता संग्राम से जुड़े अनेक रहस्य आज भी रहस्य बने हुए हैं। इस संग्राम के साक्षी रहे अनेक दस्तावेज आज भी अनछुए पड़े हैं। जो गुप्त दस्तावेज इस दौरान इंग्लैण्ड भेजे गये वे सभी उपलब्ध नहीं कराये जा सके हैं। उर्दू, अरबी, फारसी के अनेक सबूत भाषा की समस्या के कारण अभी तक उपेक्षा के शिकार बने पड़े हैं। वस्तुतः १८५७ का गदर एक जन-विद्रोह था जिसे अत्यंत घृणित एवं पाश्विक उपायों से अंग्रेजों ने कुछ गद्दार भारतीयों के सहयोग से कुचल डाला था। जुल्म की इतिहा यह थी कि पेशावर से कोलकाता तक सड़क के हर पेड़ पर कम से कम एक देशभक्त

की उल्टी लाश अवश्य लटकायी गई थी जिसे देख भारतीय मन आतंकित हो सके और विद्रोह का रास्ता छोड़ दे। कानपुर के सेंट्रल पार्क का 'बूढ़ा बरगद' साक्षी रहा है कि एक ही दिन में सैकड़ों देशभक्तों की लाशें उसकी शाखाओं पर लटकाई गई थीं क्योंकि कानपुर देशभक्तों का खास मुकाम था। जिसकी रहनुमाई में यह संग्राम लड़ा गया वह था अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर जो उसके अपने ही दामाद के विश्वासघात के कारण गिरफ्तार हुआ और उसके शहजादों की निर्मम हत्या कर उनके शीश एक थाली में सजा कर इस बूढ़े शहंशाह के सामने पेश किये गये। इस तरह के एक-दो नहीं लाखों माँ-बाप के लाल इस संघर्ष में छीन लिए गये थे। भारत की शायद ही कोई जाति या वर्ग ऐसा बचा होगा जिसने अपने रक्त का अर्ध आज़ादी की देवी पर न चढ़ाया हो। कुछ सिक्ख रियासतों ने अंग्रेजों को खुली मदद न दी होती, कुछ राजपूत रिसायतें किंकर्तव्यविमूढ़ता का शिकार न बनी होतीं और नेपाल के गोरखे अंग्रेजों के रक्षा कवच न बने होते तो जो आज़ादी हमें १९४७ में जाकर मिली वह नब्बे साल पहले ही १८५७ में मिल गई होती। लेकिन विफल होकर भी इस जंगे आज़ादी ने अपना पुरजोर असर दिखाया जिसकी वजह से सत्ता का हस्तांतरण ईस्ट इण्डिया कम्पनी से छिन कर ब्रिटिश ताज को प्राप्त हुआ और भारत पर इंग्लैण्ड की संसद का सीधा नियन्त्रण हो गया। महारानी विक्टोरिया ने अपने घोषणा-पत्र में भारतीय प्रजा को कुछ रियायतें देने की घोषणाएँ कीं लेकिन शांतिर अंग्रेज अब और अधिक चालाकी, मक्कारी व दगाबाजी से काम करने लगा था। उपनिवेशवाद का बीभत्स रूप अब किस्तों में भूमि राजस्व विभाग, नई हिन्दुस्तानी फौज, खुफिया संस्थान व पुलिस, नई न्याय व्यवस्था जिसके अन्तर्गत निजी कानून, नागरिक व आपराधिक दंड संहिता बनी, वनों, जनजाति क्षेत्रों, बागानों, नमक क्षेत्रों, खदानों, बैंकों की स्थापना व कर्ज देने सम्बन्धी ढेरों कानून बने। भूमि अधिग्रहण करने, देशी और विदेशी व्यापार के नये नियम व तट कर बने। इन उपनिवेशवादी कानूनों को लागू करने के लिए एक नई नौकरशाही की भी स्थापना हुई। ऐसी शिक्षा व्यवस्था लागू की गई जो इस नौकरशाही को चुस्त और मजबूत बना सके, उपनिवेशवादी हितों की रक्षा कर सके, विदेशी वस्तुओं का मूल्यांकन यूरोपीय दृष्टि से कर सके, ज्ञान-विज्ञान और प्रगति के सभी स्रोतों का उद्गम यूरोप से होना मान सके, आर्थिक पूंजीवादी व्यवस्था के तहत बैंबर्स ऑफ कामर्स, जमींदारी सोसाइटी, बागान मालिक सोसायटी और वेस्ट मिनस्टर शैली के संसदीय लोकतंत्र को तरजीह देते हुए राजनीतिक दलों की स्थापना कर सके। 'फूट डालो राज करो' का एक नया तन्त्र विकसित करते हुए इन उपनिवेशवादी गुर्गों ने साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रीयता, भाषावाद, अल्पसंख्यकवाद, दलितवाद को भुनाना भी शुरू किया जिससे एक वर्ग दूसरे वर्गों के प्रति घृणा कर सके, अपने-अपने अधिकारों को लेकर सड़क पर उतर सके, देश का विभाजन तक करा सके। इस स्थिति से निपटने के लिए देश में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का दौर चला जिसका नेतृत्व राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, योगी अरविन्द घोष, महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द, महादेव गोविन्द रानाडे, ज्योतिबा फुले आदि युग-पुरुषों ने किया। इस सांस्कृतिक धरोहर का सदुपयोग आगे चल कर बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, गोपाल कृष्ण गोखले स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा गांधी आदि ने अपनी राजनीतिक गतिविधियों में उठाया। स्वामी श्रद्धानन्द जी का दिल्ली की जामा मस्जिद और फतेहपुरी मस्जिद में जाकर मुसलमानों को सम्बोधित करना इसी युग का सुफल था। बाद में उनकी निर्मम हत्या एक मतांध मुस्लिम के हाथों हुई जो इस बात की सूचक थी कि साम्प्रदायिक सौहार्द को भंग करने वाली ताकतें भी इस देश में विद्यमान हैं फलतः पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना और राष्ट्रीय गीतों के अमर रचनाकार अल्लामा इकबाल जो कभी राष्ट्रवादी थे वे बाद में राष्ट्र के विभाजन के पैरोकार बन बैठे और मास्टर तारा सिंह जैसे लोगों ने सिख होमलैण्ड की मांग इसी दौरान बड़ी गम्भीरता और तत्परता से उठाई। उसी तरह की चिंगारी दक्षिण में भी सुलग रही थी जो बाद में रामा स्वामी नायकर के रूप में भड़की। ऐसी मुस्लिम रियासतों ने जहाँ मुस्लिम अल्पसंख्यक और हिन्दु बहुसंख्यक था पाकिस्तान में विलय करने के संकेत देने शुरू कर दिये। परदे के पीछे शह मात का जो खेल चल रहा था उसे उपनिवेशवादी ताकतों ने खूब हवा दी जिससे कि दूसरे दौर का स्वाधीनता आन्दोलन दम तोड़ सके। इन सभी घटनाओं का लेखा-जोखा ईमानदारी से यदि देश की जनता के सामने रखा जाता या विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम का उसे हिस्सा बनाया जाता तो जो उपनिवेशवादी अवधारणाएँ देश में आज़ादी के बाद बची रहीं उनका खात्मा हो चुका होता। आज तो ये अवधारणाएँ दुर्भाग्य से दलगत

राजनीति का और सरकार की तुष्टीकरण नीति का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। देश के काले अंग्रेजों ने गोरे अंग्रेजों की राह पकड़ कर उपनिवेशवादी नीतियों को चिरस्थायी बना दिया है और आज़ादी के उस मकसद को, जिसके लिए दो दौर के स्वाधीनता संघर्ष में लाखों लोगों ने बलिदान दिया, भुला दिया गया है। आज़ादी चन्द लोगों तक ही सीमित होकर रह गई है जिसका पूरा लुत्फ पूंजीवादी या राजनीतिक लोग उठा रहे हैं। देश का अन्नदाता किसान आज आत्महत्याएँ करने पर मजबूर है। देश की युवा शक्ति भटक कर राहजनी, डकैती, अपहरण, फिरौती, हत्याओं का धंधा करने लगी है। साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण, नारी उत्पीड़न, भाषावाद, क्षेत्रीयता, लिंग भेद, नस्लभेद आज़ादी के कई दशकों में बजाय खत्म होने के और अधिक पनपे हैं। यहाँ तक कि हमारे परम्परागत जीवन मूल्य जिन पर हम गर्व करते थे वे भी हमारे जीवन से, परिवार से, समाज से खत्म होते जा रहे हैं। निश्चय ही देश ने भौतिक उन्नति की है, विज्ञान, तकनीक, उद्योग के क्षेत्र में आशातीत प्रगति की है लेकिन हमारे जीवन से नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का निरंतर ह्रास भी होता रहा जो सुखद भविष्य के प्रति हमें चिंता में डालता है। जाहिर है कि आज़ादी के संघर्ष के दौरान समाज में जो मूल्य प्रतिष्ठित हुए थे वे आज़ादी मिलते ही तेजी से विलुप्त होने लगे और जिन उपनिवेशवादी तन्त्रों के विरुद्ध यह संघर्ष हुआ था वह समूचा तन्त्र यथावत बना रहा।

आज जरूरत इस बात की है कि जंगे आज़ादी का इतिहास निरपेक्ष होकर, निष्पक्ष होकर लिखा जाये। जिन मूल्यों की रक्षा के लिए यह जंग शुरू हुई उन मुद्दों को फिर से सामने लाया जाये। आज़ादी के मकसद की पुनः व्याख्या हो और गत ७५ वर्षों में हमने क्या खोया क्या पाया इसकी हो विशद विवेचना। जंगे आज़ादी और आज के दौर में क्या अन्तर हम देख रहे हैं यह बात भी खुल कर सामने आनी चाहिए। हमें उन कारणों को ढूँढ़ना होगा जो आज़ादी मिलने पर भी करोड़ों लोगों को मूलभूत अधिकारों अर्थात् रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा और न्याय से वंचित रखे हुए हैं। देश में अपराध बढ़ें, आतंकवाद पनपे, साम्प्रदायिक उपद्रव हों, जातीय विद्वेष की आग भड़कती रहे क्षेत्रीयता की भावना भड़के, बड़ी मछली छोटी मछली को खाती रहे— यह समूचा परिदृश्य गुलामी का है अथवा आज़ादी का इस पर गम्भीरता से मंथन होना चाहिए। राजनीतिक आज़ादी पाने का अर्थ समूची आज़ादी की गारंटी नहीं है यदि देश की अधिसंख्यक जनता आर्थिक दासता की शिकार है, सामाजिक विभाजन व शोषण, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड, अंधविश्वासों, गुरुडम और शैक्षिक विषमता की गुलाम है, जातीय पूर्वाग्रहों की शिकार है। जिस सांस्कृतिक पुनर्जागरण की नींव पर राजनीतिक स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी गई आज़ादी मिलते ही पुनर्जागरण के उन मूल्यों की एकाएक अनदेखी क्यों हो गई इस पर भी मंथन होना चाहिए क्योंकि इन मूल्यों का महत्व राजनीतिक स्वाधीनता से भी बढ़ कर है। इस दिशा में यदि स्वस्थ चिन्तन होगा तो सम्पूर्ण स्वाधीनता के तीसरे दौर की सम्भावनाएँ अवश्य बलवती हो सकेंगी। आज का युगधर्म और राष्ट्रधर्म हमें इस पथ पर बढ़ने की सतत प्रेरणा दे रहा है लेकिन यह प्रेरणा दलगत राजनीति के अरण्य रोदन में कहीं दबती जा रही है अतः आज़ादी का निष्पक्ष इतिहास सरकारी संसाधनों का मोहताज होकर नहीं लिखा जा सकता और न ही किसी वाद के पूर्वाग्रहों का आश्रय लेकर लिखा जा सकता है यह तय है।

आज़ादी का यह इतिहास तो किसी निर्धन की कुटिया में बैठ कर तेल के दीये या कैरोसीन की लालटेन या मोमबत्ती की लौ में बैठ कर ही लिखा जा सकेगा। जिस संवेदना और करुणा को लेकर महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की थी वही संवेदना और करुणा आज़ादी के इतिहास की कलम व स्याही बन सकती है अन्यथा इतिहास के नाम पर जो भी लिखा जायेगा वह सिवाय एक धोखे और मज़ाक के अन्य कुछ भी नहीं होगा। स्वाधीनता महज एक औपचारिकता, एक उत्सव, एक समारोह बन कर न रह जाये बल्कि तीसरे दौर की आज़ादी का शंखनाद बने, सांस्कृतिक पुनर्जागरण का समाघोष बने तभी इसका कुछ ऐसा अर्थ निकल सकता है जो शोषित, पीड़ित, विभाजित जनता का कायाकल्प कर सके। अतः आज़ादी का इतिहास लिखने वाले किसी भी इतिहासकार के लिए ऐसा इतिहास लिखना मनोविलास नहीं एक युगधर्म व राष्ट्रधर्म होगा। इसी नियति का कायल होकर उसे इतिहास लेखन का अपना कार्य सम्पादित करना होगा। ऐसा गरिमापूर्ण इतिहास ही राष्ट्रीय अस्मिता को दीमक बन कर चाट रहे सम्प्रदायवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, अपराध वृत्ति, आतंकवाद, लिंग भेद नस्ल भेद आदि महारोगों को नष्ट करने में सक्षम होगा।

आर्य समाज मन्दिर पुराना गाँधी नगर गाजियाबाद (उ० प्र०) का गौरवमयी हीरक जयंती समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

समारोह में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की रही गरिमामयी उपस्थिति



आर्य समाज मंदिर पुराना गाँधी नगर, गाजियाबाद द्वारा उत्कृष्ट समाज सेवा के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 11, 12 एवं 13 अप्रैल 2026 को गौरवमयी हीरक जयंती समारोह अत्यंत भव्य एवं गरिमामय रूप से सम्पन्न हुआ।

इस पावन अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उनके अतिरिक्त मुख्य अतिथि अतुल गर्ग (सांसद, गाजियाबाद),

अध्यक्षता बालेश्वर त्यागी (पूर्व मंत्री) द्वारा की गई। विशिष्ट अतिथियों में श्रद्धानंद शर्मा, सुभाष गर्ग, सत्यवीर चौधरी, नरेन्द्र पांचाल, डॉ. राजकुमार आर्य, भगवान देव, नरेश वाचस्पति एवं डॉ. प्रतिभा सिंघल आदि की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

11 अप्रैल 2026 को प्रातः 9:00 बजे से वैदिक यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश का आयोजन हुआ तथा सायं 4:00

बजे "एक शाम महर्षि दयानन्द के नाम" शीर्षक से बच्चों द्वारा संगीतमय सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसने सभी का मन मोह लिया।

12 अप्रैल 2026 को हीरक जयंती समारोह प्रातः 9:00 बजे से वैदिक यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश के साथ सम्पन्न हुआ। दोपहर 1:00 बजे प्रसाद एवं ऋषि लंगर का आयोजन किया गया, **शेष पृष्ठ 7 पर**

अटौर, नंगला जिला-गाजियाबाद (उ० प्र०) में छोटे लाल गुरुकुल का हुआ शुभारम्भ

लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की

उत्तर प्रदेश के जिला-गाजियाबाद में अटौर, नंगला गांव में श्री छोटे लाल मेमोरियल गुरुकुल का दिनांक 11 अप्रैल, 2026 को विधिवत रूप से लोकार्पण किया गया। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में चौ. अमन सिंह (मेरठ), श्री बृजपाल तेवतिया-गाजियाबाद, यज्ञ ब्रह्मा कुमारी अंजलि आर्या-करनाल के अतिरिक्त पं. कुलदीप आर्य-बिजनौर, वेदपाल वैदिक-बड़ौत भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे।

गुरुकुल श्री छोटे लाल मेमोरियल अटौर नंगला, गाजियाबाद के उद्घाटन समारोह में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आधुनिक गुरुकुलों के महत्व को विशेष रूप से रेखांकित करते हुए कहा कि गुरुकुल केवल शिक्षा का स्थान



नहीं, बल्कि जीवन निर्माण की प्रयोगशाला हैं, जहाँ विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है।

आधुनिक गुरुकुलों का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान देना नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, संस्कार, नैतिकता और आत्मनिर्भरता का विकास करना है। यहाँ विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर अनुशासन, संयम और श्रमशीलता सीखते हैं। स्वामी जी मानते हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जो नैतिक गिरावट और मानसिक तनाव बढ़



रहा है, उसका समाधान गुरुकुल पद्धति में निहित है।

आधुनिक गुरुकुल विज्ञान और परंपरा का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करते हैं। यहाँ कंप्यूटर, विज्ञान और आधुनिक विषयों के साथ-साथ योग, आयुर्वेद, वैदिक अध्ययन और ध्यान को भी समान महत्व दिया जाता है। इससे विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से मजबूत बनते

हैं।

स्वामी आर्यवेश जी के अनुसार गुरुकुलों का लक्ष्य केवल नौकरी पाने वाला व्यक्ति तैयार करना नहीं, बल्कि समाज के लिए आदर्श नागरिक तैयार करना है। यहाँ गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाता है। विद्यार्थी प्रकृति के निकट रहकर सरल जीवन जीना सीखते हैं, जिससे उनका व्यक्तित्व संतुलित और स्थिर **शेष पृष्ठ 7 पर**

श्री हरदेव आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती गेरी देवी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने दी श्रद्धांजलि

आर्य समाज के कर्मठ तथा जुझारू साथी एवं प्रख्यात समाजसेवी श्री हरदेव आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती गेरी देवी का विगत दिनों आकस्मिक निधन हो गया था। माता जी की स्मृति में उनके निवास स्थान पर दिनांक 23 अप्रैल, 2026 को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिल्ली से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान बिरजानंद एडवोकेट, आर्य वीरदल राजस्थान के प्रधान श्री भंवरलाल आर्य, पूर्व मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार श्री सयम लोढ़ा, बॉक्सिंग इंडिया के पूर्व उपाध्यक्ष श्री दलपत सिंह आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने श्रद्धांजलि सभा में पहुंचकर अपनी ओर से संवेदनाएं व्यक्त की।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भावमयी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्रीमती गेरी देवी एक धर्मपरायण, कर्तव्यनिष्ठ एवं आदर्श गृहिणी थीं। उनका जीवन सादगी, सेवा और उच्च संस्कारों का जीवंत उदाहरण रहा है। उन्होंने परिवार के प्रत्येक सदस्य को नैतिक मूल्यों और धार्मिक आचरण की शिक्षा दी, जो आज परिलक्षित होती है। उनका निधन न केवल उनके परिवार के लिए, बल्कि सम्पूर्ण आर्य समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने आगे कहा कि श्री हरदेव आर्य जी के सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों के पीछे माता गेरी देवी का मौन किंतु अत्यंत



प्रभावशाली योगदान रहा है। वे सदैव परोक्ष रूप से प्रेरणा स्रोत बनी रहीं और परिवार को संस्कारों की मजबूत नींव प्रदान करती रहीं। ऐसे महान व्यक्तित्व का इस संसार से जाना हम सभी के लिए एक बड़ी क्षति है। हमें उनके आदर्शों से प्रेरणा लेकर धर्ममय जीवन जीने का संकल्प लेना चाहिए।

स्वामी आदित्यवेश जी सहित अन्य उपस्थित महानुभावों ने भी दिवंगत आत्मा को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि वे पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें तथा शोकाकुल परिवार को इस दुःख की घड़ी में धैर्य, शक्ति एवं संबल प्रदान करें।

श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में सर्वश्री चांदमल आर्य, भंवरलाल हटवाल, जितेंद्र आर्य, रोशन आर्य, हरिसिंह आर्य, शिवजी सोनी, उमेश सिंह आर्य, लक्ष्मण सिंह, गणपत सिंह आर्य, मदनगोपाल, वीरेंद्र मेहता सहित जोधपुर से राजेन्द्र जी तथा बालोतरा से धनजी भाई भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। अंत में श्री हरदेव आर्य जी के पुत्र श्री पुरुषोत्तम आर्य, श्री अरुण आर्य एवं पुत्री मनीषा ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस कठिन समय में सभी का सहयोग एवं संवेदना उनके परिवार के लिए संबल का कार्य कर रही है।

ज्ञातव्य हो कि स्वर्गीय श्रीमती गेरी देवी का जीवन अत्यंत प्रेरणादायक रहा। यद्यपि वे औपचारिक रूप से निरक्षर थीं, तथापि उनका जीवन ज्ञान, संस्कार और धर्मनिष्ठा से परिपूर्ण था। लगभग 63 वर्ष की आयु में उन्होंने इस संसार को अलविदा कहा तथा उनका वैवाहिक जीवन लगभग 45 वर्षों का रहा, जिसमें उन्होंने परिवार को आदर्श मूल्यों से सुसज्जित किया। वे सदैव धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय रहीं। उन्होंने नैनीताल शिविर, हैदराबाद सम्मेलन, मुंबई 2001 सम्मेलन में सहभागिता की तथा वर्ष 2016 में शिवरात्रि के अवसर पर टंकारा यात्रा में भी सम्मिलित हुईं। इसके अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाश कार्यक्रम, उदयपुर (15 मार्च) तथा वर्ष 2026 में टिटौली (हरियाणा) में आयोजित 19वें 'बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ' में भी उनकी सक्रिय उपस्थिति रही।

वैदिक यज्ञ समिति, धनौरा (टीकरी) बागपत द्वारा आयोजित आर्य महासम्मेलन में चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ का हुआ भव्य आयोजन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की रही गरिमामयी उपस्थिति

वैदिक यज्ञ समिति धनौरा (टीकरी), जनपद बागपत, उत्तर प्रदेश द्वारा दिनांक 26, 27 एवं 28 मार्च 2026 को ग्राम धनौरा में गुलबीर पुत्र तेजसिंह के निवास-प्रांगण में तीन दिवसीय “आर्य महासम्मेलन” का भव्य एवं सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर “चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ” का भी विशाल आयोजन संपन्न हुआ।

इस महासम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी यज्ञ-ब्रह्मा एवं मुख्य वक्ता के रूप में पधारे, जिनकी प्रेरणादायी उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाया। उनके अतिरिक्त कु. माद्री शास्त्री, भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क जी, भजनोपदेशिका बहन कल्याणी आर्या, उद्घाटनकर्ता श्री प्रेम सिंह वैदवान (समाजसेवी), मंच संचालक श्री अंकित आर्य एवं श्री देवेन्द्र आर्य, अध्वर्यु के रूप में सुधीर आर्य, अजयवीर जी, सन्तु पंडित जी, मोनू आर्य जी, नरेन्द्र आर्य जी तथा संरक्षक के रूप में वानप्रस्थी ओमपाल जी सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।



स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रवचनों में वैदिक सिद्धांतों विशेषकर पंचमहायज्ञ, अष्टांग योग तथा सोलह संस्कारों का अत्यंत सरल एवं प्रभावशाली शैली में वर्णन किया। उन्होंने यज्ञ के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा कि यज्ञ केवल अग्नि में आहुति देने का कर्म नहीं, बल्कि यह जीवन में समर्पण, सेवा, परोपकार और त्याग की भावना को धारण करने का नाम है। जब

तक “इदन्न मम” (यह मेरा नहीं है) की भावना हमारे आचरण में नहीं उतरती, तब तक यज्ञ का वास्तविक लाभ प्राप्त नहीं हो सकता।

उन्होंने यह भी बताया कि यज्ञमान का दृढ़ संकल्प ही यज्ञ की वास्तविक अग्नि है। जिस प्रकार भौतिक अग्नि के बिना अग्निहोत्र संभव नहीं, उसी प्रकार संकल्प रूपी अग्नि के बिना ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ आदि भी पूर्ण नहीं हो सकते। यदि संकल्प प्रबल हो तो सभी यज्ञीय कार्य सफल होते हैं, और यदि वह दुर्बल हो जाए तो श्रेष्ठ कार्य भी अधूरे रह जाते हैं।

कार्यक्रम के दौरान 26 एवं 27 मार्च को प्रतिदिन प्रातः 8:00 बजे से 11:30 बजे तक यज्ञ एवं प्रवचन, अपराह्न 2:30 बजे से 5:00 बजे तक प्रवचन एवं भजन, तथा रात्रि 8:00 बजे से 11:00 बजे तक भजन सन्ध्या का क्रम निरंतर चलता रहा। 28 मार्च को प्रातः 10:30 बजे पूर्णाहुति के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

यज्ञ में मुख्य यज्ञमान के रूप में श्री

शेष पृष्ठ 7 पर

श्री संजीव नरुला एवं श्रीमती नीरज नरुला परिवार के निवास स्थान 138, मॉडल कॉलोनी, यमुनानगर में 9 से 13 अप्रैल, 2026 तक आयोजित सामवेद पारायण यज्ञ भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न सामवेद पारायण यज्ञ में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी हुए विशेष रूप से सम्मिलित यज्ञ के ब्रह्मा पद को डॉ. कमल नारायण आर्य ने सुशोभित किया

श्री संजीव नरुला एवं श्रीमती नीरज नरुला के यज्ञमानत्व में उनके निवास स्थान 138 मॉडल कॉलोनी यमुनानगर पर दिनांक 9 से 13 अप्रैल, 2026 तक सामवेद पारायण यज्ञ का विशेष आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में डॉ. कमल नारायण जी आर्य (रायपुर, छत्तीसगढ़) से पधारे उनके अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं स्थानीय विद्वानों में सर्वश्री धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री, श्री सूर्यपाल शास्त्री, श्री सुरेश चन्द्र शास्त्री आदि ने भी निरन्तर यज्ञ में उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। यज्ञ में मुख्य यज्ञमान की भूमिका प्रिय आलोक



नरुला एवं वैभव नरुला ने भूमिका निभाई। प्रतिवर्ष की भांति यज्ञ का यह कार्यक्रम नरुला परिवार की ओर से बड़ी श्रद्धा एवं भावना के साथ आयोजित किया गया। पूर्णाहुति के अवसर पर नगर के सैकड़ों आर्यजनों ने उपस्थित होकर अपनी आहुतियाँ प्रदान की और नरुला परिवार को अपनी शुभकामनाएं देखकर उत्साह बढ़ाया। इस पांच दिवसीय कार्यक्रम में डॉ. कमल नारायण जी के यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप विषय पर प्रभावशाली प्रवचनों की धूम मची रही तथा लोगों ने विशेष रुचि लेकर उनके प्रवचनों को सुनने के लिए कार्यक्रम में निरन्तर

शेष पृष्ठ 7 पर

ग्राम आर्य नगर स्थित आर्य समाज का 91वां वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न नशामुक्त और पाखंडमुक्त समाज का निर्माण आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है –स्वामी आदित्यवेश

हिसार जिले के गांव आर्य नगर स्थित आर्य समाज का 91वां वार्षिक उत्सव 4 व 5 अप्रैल 2026 को अत्यंत भव्य और प्रेरणादायक वातावरण में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सामाजिक जागरूकता, वैदिक विचारधारा और राष्ट्र निर्माण के संदेशों की प्रभावशाली प्रस्तुति देखने को मिली।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि वर्तमान समय में आर्य समाज की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। उन्होंने नशामुक्ति, पाखंड उन्मूलन और चरित्र निर्माण को समाज की प्राथमिक आवश्यकता बताते हुए युवाओं से आगे आने का आह्वान किया।

महिला सम्मेलन की मुख्य वक्ता ‘बेटी बचाओ’ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने नारी सशक्तिकरण पर जोर देते हुए कहा कि शिक्षित और संस्कारित बेटियाँ ही सशक्त समाज की आधारशिला होती हैं। वहीं, सार्वदेशिक आर्या युवती परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन प्रवेश आर्या ने 6 से 12 जून तक रोहतक जिले के गांव टिटौली में आयोजित होने वाले योग प्रशिक्षण शिविर में अधिक से



अधिक बेटियों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

आदमपुर के विधायक चंद्रप्रकाश आर्य ने अपने संबोधन में कहा कि ‘आर्य नगर’ नाम अपने आप में गौरव और प्रेरणा का प्रतीक है, जो हमें पूर्वजों के महान कार्यों की याद दिलाता है।

इसके अतिरिक्त आर्य भजनोपदेशक कुलदीप आर्य, बहन कल्याणी आर्या, रामकुमार आर्य टोकस, बहन मुकेश आर्या सहित अन्य वक्ताओं ने भी वैदिक सिद्धांतों, सामाजिक एकता और संस्कारों की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का कुशल संचालन आर्य समाज के मंत्री महेंद्र आर्य ने किया, जबकि प्रधान कर्नल ओम प्रकाश ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। सभी अतिथियों को स्मृति-चिन्ह एवं ओम-पट्ट भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज नागोरी गेट हिसार के प्रधान श्री देवेंद्र सैनी, मंत्री श्री नरेंद्र मिगलानी, कोषाध्यक्ष श्री बलराज मलिक, श्री ईश कुमार, श्री धर्मसिंह आर्य, श्री रत्न सिंह (सरपंच), कैप्टन श्री सुबेसिंह, श्री दलबीर आर्य, श्री कृष्ण आर्य, श्री दीप कुमार, श्री सुभाष जांगड़ा, श्री रविंद्र सिंह, श्री महेश योगाचार्य, श्री सीताराम जांगड़ा, श्री मंजीत जांगड़ा सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों का विशेष योगदान रहा। यह उत्सव समाज में संस्कार, सेवा और समर्पण की भावना को सुदृढ़ करने वाला सिद्ध हुआ।

स्व. महात्मा फगूराम एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती देवी की स्मृति में दिनांक 31 मार्च एवं 1 अप्रैल, 2026 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में दो दिवसीय यज्ञ एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम हुआ सम्पन्न सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की अध्यक्षता

गत् 31 मार्च एवं 1 अप्रैल, 2026 को प्रसिद्ध समाजसेवी सेवानिवृत्त एस.डी.ओ. श्री बलराज आर्य (सोनी) के सौजन्य एवं पुरुषार्थ से उनके पूज्य पिता स्व. महात्मा फगूराम एवं उनकी पूज्या माता श्रीमती पार्वती देवी जी की स्मृति में दो दिवसीय यज्ञ एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में उत्साह के साथ आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से दोनों दिन उपस्थित रहे और कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले सैकड़ों आर्यजनों को सम्बोधित किया। कार्यक्रम की व्यवस्था का दायित्व बहन प्रवेश आर्या ने बड़ी कुशलता के साथ निभाया। उनके साथ आर्य साधिका मण्डल टिटौली की सभी सदस्याओं ने विशेष सहयोग किया। कार्यक्रम में स्वामी आदित्यवेश जी, बहन पूनम आर्या जी आदि के भी उपदेश हुए।



इस दो दिवसीय कार्यक्रम में प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कविता आर्या एवं उनकी सुपुत्री कुमारी ऋषिका आर्या एवं सुपुत्र आर्य दीप के भजनों का कार्यक्रम रहा। एक दिन का कार्यक्रम टिटौली में और दूसरे दिन का कार्यक्रम जवाहर नवोदय विद्यालय भुसकानी में रहा। जिसमें भारी संख्या में ग्रामीण जनता ने भाग लिया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का सम्पूर्ण व्यय श्री बलराज आर्य ने उठाया और दोनों दिन कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले सैकड़ों स्त्री-पुरुषों को जहां प्रसाद वितरण किया गया वहीं उन्हें सम्मानित भी किया गया। सम्मानित होने वाले सभी स्त्री-पुरुषों को शॉल भेंट किया गया। दोनों दिन के यज्ञ को स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में संचालित किया गया जिसमें सैकड़ों लोगों ने अपनी आहुतियाँ प्रदान की।

सत्यार्थ प्रकाश एक अमूल्य धारोहर है

- ब्रिगेडियर चितरंजन सावंत, वी. एस. एम.

‘सत्यार्थ प्रकाश’ मानव मात्र की धरोहर है और है मेरी पैतृक संपत्ति। पिछली तीन पीढ़ियों से हमारे व्यक्तित्व विकास का साधन रहा है सत्यार्थ प्रकाश। सन् 1883 ई. में महाराणा जी की नगरी उदयपुर, राजपूताना में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे संस्करण का लेखन पूरा किया। प्रथम संस्करण की अशुद्धियों को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वयं सुधारा था। वैदिक यंत्रालय, प्रयाग के प्रबन्धकर्ता, मुंशी समर्थदान ने मुद्रित करके जन सामान्य को उपलब्ध कराया तो समस्त भारत में वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। मार्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की नगरी, अयोध्या अछूती न रही। स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वयं अयोध्या पधारथे, किन्तु वह था सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन से कई वर्ष पूर्व फिर भी, नये विचारों का प्रचंड वेग अयोध्या के निकटवर्ती ग्राम बरौरा को, जहाँ सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन की आधी शताब्दी बाद मेरा जन्म हुआ, भ्रांति भरी निद्रा से जगा न पाया था। अनेक सुधारक आये और चले गये किन्तु बरौरा ग्राम अज्ञान के सागर में ‘अनन्त शयनम’ की स्थिति में रहा। आया प्रथम विश्व युद्ध सन् 1914-18, मेरे पितामह के छोटे भाई, सम्राट जार्ज की तरफ से हिटलर पूर्व जर्मनी से युद्ध करने विदेश गये। जब वे लौटे तो भ्रांतियों का भार उतार चुके थे, उनके हाथ में थी एक पुस्तक, सत्यार्थ पकाश, मन-मस्तिष्क दयानन्द सन्देश से ओत-प्रोत थे। ‘जनाब’ का लोप हो गया था, ‘मुंशी’ का स्थान ले लिया ‘महाशय’ ने महाशय राम लोटन सावंत।

सत्यार्थ प्रकाश का पठन-पाठन परिवार में आरम्भ हुआ। परिवार और पड़ोस की महिलाओं के लिए सत्यार्थ प्रकाश ‘श्रुति’ समान था अक्षर ज्ञान का महिला जगत में अभाव था। पिछले आठ-नौ दशकों में, सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय और तृतीय समुल्लासों ने महिलाओं में हलचल मचा दी। उनमें शिक्षा का अभूतपूर्व प्रसार हुआ। मेरी दादी (पितामह की पत्नी) जो पिछली शताब्दी की सन्ध्या में ससुराल की ड्योढ़ी में दाखिल हुई थीं। अक्षर ज्ञान से अनभिज्ञ थीं। मेरी मां ने किसी प्रकार हस्ताक्षर का प्रयास किया था और उस समय को देखते हुए प्रयास सफल माना गया था। सत्यार्थ प्रकाश के प्रभाव में नारी शिक्षा लोकप्रिय हुई। मेरे बच्चों की माँ, मुझसे विवाह के समय संस्कृत में एम. ए. थीं और अब वेदपाठी हैं। मेरी बेटियों ने विदेश में पी. एच. डी. और एम. ए. किया विदेशी भाषाओं में। नारी शिक्षा का यह उत्थान, ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश द्वारा लाये गये जन-जागरण का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

आइये लौटते हैं अपने गाँव में सत्यार्थ प्रकाश आगमन काल में। गाँव के बीचों बीच बना बड़ा शिवालय धार्मिक और सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र था और है। राम के राज्य में भी शैव मत उतना ही लोकप्रिय था जितना कि वैष्णव। किन्तु काठियावाड़ स्थित टंकारा के शैवों के समान कड़रता न थी बरौरा में। तभी तो किसी मूलशंकर ने जन्म नहीं लिया। वर्ष प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि आती रही, उपवास और नींद के दोहरे प्रहार को न सह सकने वाले शिवभक्त आधी रात होते-होते सपने में साक्षात शिव के दर्शन से संतुष्ट होते रहे। गणेश के वाहन, गणेश के पिता पर चढ़ाया गया छप्पन भोग खाते रहे, मुक्त और स्वच्छंद चूहे शिवलिंग पर शवासन करते रहे किन्तु कोई मूलशंकर समान बालक सच्चे शिव की खोज में न निकला। हाँ, बालक मूलशंकर से प्रौढ़ दयानन्द बने आदित्य ब्रह्मचारी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश ने बरौरा के जिज्ञासुओं के ज्ञान चक्षु खोल दिये। गाँव में और आस-पास अविद्या और अंधकार छाये हुए थे। जड़पूजा का बोल बाला था। वेदोक्त ईश्वर की स्तुति का प्रायः लोप हो चला था। चेचक निकलने पर नीम के पत्ते के नीचे हाथी-घोड़े और स्त्री की आकृति के खिलौनों को रखकर ‘देवी’ को भेंट चढ़ाई जाती थी। यहाँ तक कि बच्चों के बीमार पड़ने पर प्रेत-पिशाच शमन के लिए ओझा-सोखा बुलाये जाते थे। इन भ्रांतियों के भूतों को भगाने के लिए मेरे पिता, महाशय राम नरेश सावंत, और उनके सहयोगियों को सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास से सहायता मिली।

भ्रांतियों का भार ढोने से युवा वर्ग कतराने लगा। कभी-कभी तो पोंगा-पंथियों ने जाति बाहर करने की धमकी दी। ‘नीम का चौरा’ अब शीतला माता (चेचक) के शमन का स्थान नहीं अपितु नई लहर की गोष्ठी का केन्द्र बन गया था। होली मिलन में अछूत भी आमंत्रित किये गये। बुजुर्गों ने पोप पंथी दबाव में शूद्रों से होली में गले मिलने पर हुक्का पानी बंद कर दिया। यह सामाजिक दंड प्रभावहीन हुआ। देव दयानन्द के दीवाने तो हुक्का पीते नहीं थे।

सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास, में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वयं लिखा है :-

बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्य मदकारी तदुच्यते।

(जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें)

एकादश समुल्लास में अवैदिक मत-मतांतरों के बारे में सही स्थिति जानने के बाद बच्चों की बीमारी में उचित उपचार होने लगा। कपटी और धूर्त ओझा अपने कपोल कल्पित घृणित प्रेत पिशाचों के साथ छू मंतर हो गये। नवीन आर्यों के ज्ञान का स्रोत सत्यार्थ प्रकाश सच्चा पथ प्रदर्शक बना।

सत्यार्थ प्रकाश का परिवार में प्रभावी होना मेरे स्वयं के लिए सदैव सर्वहितकारी रहा। आर्यावर्त में महाभारत उपरांत पनपे वेद विरुद्ध मत-मतांतरों के अतिरिक्त किरानी-कुरानी पोप लीलाओं से सुरक्षा प्रदान करने वाला कवच रहा सत्यार्थ प्रकाश। किरानी-कुरानी ब्यूह और कुचक्र को ध्वस्त करने वाला ब्रह्मास्त्र है सत्यार्थ प्रकाश। मेरे कथन की पुष्टि करते हैं मेरे जीवन के कई दिन और पल।

मेरा जन्म शनिवार को हुआ। उस समय शनिवार शुभ नहीं माना जाता था। मेरे संयुक्त परिवार में मेरे जन्म से खुशी की लहर दौड़ गई किन्तु गाँव की बड़ी-बूढ़ियों ने शनिवार को अशुभ मानते हुए मुँह बिचकाया। एक अन्य अज्ञानी ने सलाह दी कि सूरपुर के मौलवी पहुँचे हुए हैं और नवजात शिशु की शनि से रक्षा के लिए उनका बनाया ताबीज प्रभावी होगा। स्थानीय पोंगा पंथी पोप ने तो ‘शनिदेव शमन’ की विधि लिखकर दे दी। बलि के बकरे की आयु एक वर्ष एक महीन एक दिन एक घंटा निर्धारित की गई। दो पीढ़ियों से सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने वाले और आर्य पथ के पथिक-परिवार को ‘शनि शमन’ की बातें न भायीं। जब मेरे पिता ने पौराणिक पंडित को सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास की यह पंक्ति दिखाई : य शनैश्चरति स शनैश्चरः, जो सबमें सहज से प्राप्त धैर्यवान है, इससे उस परमेश्वर का नाम शनैश्चर है।

तो वे विद्याविहीन महाशय ऐसे गायब हुए जैसे गधे के सर से सींग। शैशव में और बाल्यकाल में मेरी तो चांदी रही। न गले में ताबीज लटकानी पड़ी और न बाजू में बांधनी पड़ी। ‘बकरे की माँ कब तक खैर मनाती’ ऐसी कहावत है। किन्तु मेरे संदर्भ में खैर मनाने से एक वर्ष एक महीना एक दिन एक घंटा वाले बकरे की जान बच गई। मेरे जीवन में ‘शनिवार’ शुभ दिन माना जाने लगा। सेना में नये स्थान पर नये पद का कार्यभार मैंने शनिवार को सम्हाला था। न कभी अनिष्ट की संभावना मन में खटकी और न कभी कोई अनिष्ट शनिवार को नया काम शुरू करनेके कारण हुआ। मन में यही दृढ़ विश्वास रहा कि ‘शनैश्चर’ तो परमात्मा का वैदिक नाम है। ‘शनि शमन’ की बात तो मूर्ख मस्तिष्क और निर्बल मन की उपज है। इस उपज का अन्न पौराणिक पंडित के खलिहान और कोष्ठक में ही जाता है। किन्तु धूमिल होती है हमारे समाज की छवि। ‘शनैश्चर’ परमपिता परमात्मा अपने पुत्रों-पुत्रियों का अहित क्यों करेंगे? इस अचल सत्य से ही हमारा मन स्थिर है। निःसंदेह ‘शनि शमन’ के भूत रूपी भ्रांति को भगाना, सत्यार्थ प्रकाश के पठन से ही संभव हो सका।

भूत-प्रेत पिशाच आदि से कभी भी मेरा लगाव नहीं रहा, आत्मीयता का प्रश्न ही नहीं उठता। बाल्यकाल और किशोरावस्था में भी कभी समययस्कों ने तो कभी अविद्याग्रस्त सेवक-सेविका ने भूत-प्रेत की मनगढ़ंत कहानियाँ सुनाकर मेरे मन को बहकाया। कभी-कभी मन में डर समाया भी। अंधकार में सूखे पत्तों की खड़खड़ाहट से मन भयभीत हो जाता था। अंधेरे कोने से चुड़ैल के चलने का आभास होता था।

यों उस समय ‘भटकती आत्मा’ को होना या न होना मेरी अपनी कल्पना से परे था। फिर भी, रात के बारह बजे ‘जिन’ द्वारा शाही हलवाई का घंटा बजाना और सोने की मुहरें देकर रसीली चमचम खरीदने की कहानी, काल्पनिक होते हुए भी मन में मिठास भर देती थी। भय, कौतूहल, आशंका और चमचमी मिठास में झूलते हुए दिन और रात बीतते रहे। रात को कभी-कभी इसलिए जागता रहता था कि शायद कोई भूला भटका ‘जिन’ चमचम का एक दोना हमारे सिरहाने सरका जाए। परन्तु ऐसा कभी भी नहीं हुआ और हो भी नहीं सकता था। कल्पना की उड़ान और कठोर सत्य में उतना ही अंतर है जितना कि रात और दिन में। अपनी उलझन से मैंने पिता जी को परिचित कराया और फिर आरम्भ

हुआ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास का विधिवत पाठ, विशेष कर ‘भूत प्रेतादि निषेध प्रकरण’ का। फिर क्या था, विज्ञान के समीर ने शंका के बादलों का ब्यूह छिन्न-भिन्न कर दिया। आया नया सवेरा, सूर्योदय और ज्ञानोदय। स्वामी दयानन्द सरस्वती के लिखे शब्द और वाक्य मानस पटल पर अंकित हो गए। प्रेत से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि गुरु के प्राणांत होने पर उनके मृतक शरीर को ही ‘प्रेत’ कहते हैं। भूत कौन है? जो बीत गया वही भूत है, जो जीवित है वही वर्तमान है। अतः वर्तमान को भूत से भयभीत कभी नहीं होना चाहिए।

भटकती आत्मा क्या है? यह केवल भटकते मन की उपज है। विद्या के अभाव में अविद्या मन पर हावी हो जाती है। प्रकाश न रहने पर अंधकार अपने आप ही छा जाता है। जब सत्य और असत्य के बीच भेद करने की बौद्धिक शक्ति क्षीण हो जाती है तो ‘अकाल मृत्यु’ और फलस्वरूप ‘भटकती आत्मा’ की कपोल कल्पित बात से निर्बल मन भयभीत हो जाता है। मृत्यु होने पर मृतक का शरीर भस्म कर दिया जाता है। आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेती है, अतः ‘भटकती आत्मा’ का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्द हैं :

और जब शरीर का दाह हो चुका तब उसका नाम भूत होता है, अर्थात् वह अमुकनामा पुरुष था। जिसने उत्पन्न हो, वर्तमान में आ के न रहें वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। जिसको शंका, कुसंग, कुसंस्कार होता है उसका भय और शंका रूप भूत-प्रेत, शाकिनी, डाकिनी उनके भ्रमजाल दुखदायक होते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीयो समुल्लास)

इसी संदर्भ में ऋषिवर सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं :-

‘देखो! जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप, पुण्य के वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख-दुख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है?

स्पष्ट हो गया सत्यार्थ प्रकाश से कि हमें किसी भी पोंगा पंथी रचित भटकती आत्मा के भ्रमजाल में नहीं फंसना चाहिए। ग्यारहवें समुल्लास में विभिन्न ढोंगी मत-मतान्तरों की पोल खोल दी है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने। जैन मत के मानने वाले न केवल घोर नास्तिक हैं अपितु 24 तीर्थंकरों द्वारा फैलाये गये भ्रमजाल में उलझे हुए हैं, यह मुझे 12वें समुल्लास से स्पष्ट हो गया। वस्तुतः चार्बाक के नास्तिक मत की समीक्षा, ऋषिवर ने 12वें समुल्लास के आरम्भ में ही किया और फिर जैन व बौद्ध मत पर वैदिक सूर्य का प्रकाश डाल कर उन मतावलंबियों को सत्य सनातन वैदिक धर्म मार्ग पर चलने का निमंत्रण दिया। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के सिद्धान्त ने ही सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण में दो समुल्लास और जुड़वाए : 13वें में ईसाई मत का विषय और 14वें में मुसलमानों के मत का विषय है। ईसाई मत और यवन मत, यद्यपि भारतीय मत नहीं हैं किन्तु उनकी समीक्षा से हम भारतीयों की आंखें खुल गईं। कम से कम मुझे तो विदित हो गया कि भारत में आकर ये विदेशी हमारे वैदिक धर्म पर झूठे आक्षेप लगाते रहे जबकि स्वयं उनके किरानी और कुरानी मत अविद्या और अंधविश्वास की ही उपज है। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से दूध का दूध और पानी का पानी कर देना संभव हो सका। सत्यार्थ प्रकाश का पाठक निडर होकर, अपने वैदिक धर्म पर मिथ्या आक्षेप लगाने वाले को मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम, समर्थ और तत्पर है। जब एक क्रिस्तान पादरी ने कहा कि गऊ माता के पति, बैल पिता को मैला खाते देखा गया तो उत्तर था ‘वह बैल ईसाई हो गया होगा’। अस्तु।

सत्यार्थ प्रकाश की मुझे सबसे बड़ी देन है : आस्तिकता। मैं दृढ़ आस्तिक हूँ आज। महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार उनकी सच्ची आस्तिकता सत्यार्थ प्रकाश में निहित है। अनेक महानुभाव सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर नास्तिक से आस्तिक बने। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य महाराणा सज्जन सिंह, मेवाड़ नरेश, रावराजा सर नाहर सिंह वर्मा, शाहपुराधीश उनमें मुख्य थे। पंडित गुरुदत्त ने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा किन्तु उनमें नास्तिकता से आस्तिकता आई थी ऋषिवर द्वारा प्राण त्यागने का दृश्य देखकर।

सत्यार्थ प्रकाश ने मेरे समान अनेक मनुष्यों का जीवन सुधार दिया। भविष्य में असीम श्रद्धा से वेदपाठ करने वाले, सत्यार्थ पढ़ने वाले ही होंगे - यह हम आर्यों का विश्वास है - अटूट विश्वास।

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार का 123 वां वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक 13 अप्रैल, 2026 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

का दायित्व निभाया। यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी व श्री आदेश चौहान विधायक ने अपने कर-कमलों से गुरुकुल पताका फहराकर वार्षिकोत्सव समारोह का विधिवत शुभारम्भ किया। सर्वप्रथम श्री घनश्याम प्रेमी व उनके सुपुत्र श्री भूपेन्द्र आर्य के भजनों का विशेष कार्यक्रम रहा। तत्पश्चात् सभी आमंत्रित अतिथियों का व्याख्यान हुए।

स्वामी आर्यवेश जी ने घोषणा की कि वर्ष 2026 में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान शताब्दी गुरुकुल कांगड़ी में मनाई जायेगी। शताब्दी समारोह में देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संशोधन और वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में विचार किया जायेगा।

स्वामी आदित्यवेश जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली

को लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली का मजबूत विकल्प बताया। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सन् 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली को ऐतिहासिक चुनौती दी थी। यदि हमारे देश में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को क्रियान्वित कर लिया होता तो आज देश की दिशा और दशा गौरवपूर्ण होती।

मुख्य अतिथि श्री मदन कौशिक ने गुरुकुल को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और कहा कि मेरी भी प्रारम्भिक शिक्षा इसी गुरुकुल में हुई है। इसलिए मैं गुरुकुल शिक्षा पर गर्व करता हूँ।

स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने कहा कि गुरुकुलों ने देश को अनेक महान् नेता, विद्वान् लेखक और समाज

सुधारक दिये। देश के निर्माण में गुरुकुल की विशेष भूमिका रही है। आज हमें गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मजबूती प्रदान करनी चाहिए।

श्री आदेश चौहान ने गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग और आर्य विद्या सभा के अधिकारियों को धन्यवाद दिया कि उन्होंने वार्षिकोत्सव की परम्परा को फिर से प्रारम्भ कर दिया है। इससे नये विद्यार्थियों को विशेष प्रेरणा मिलेगी। उत्सव में आर्य समाज के अनेक कर्मठ कार्यकर्ता भी सम्मिलित हुए जिनमें सर्वश्री हाकम सिंह आर्य, जयदेव आर्य, आर्य बन्धु आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लंगर में प्रीति भोज की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य समाज मन्दिर पुराना गाँधी नगर गाजियाबाद (उ० प्र०) का...

जिसमें सभी आगन्तुकों ने श्रद्धापूर्वक सहभागिता की।

13 अप्रैल 2026 को बैसाखी महापर्व के उपलक्ष्य में प्रातः 9:00 बजे से यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि आर्य समाज मंदिर पुराना गांधी नगर, गाजियाबाद ने विगत 75 वर्षों में समाज सेवा, वैदिक धर्म प्रचार एवं जनकल्याण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए हैं। इस संस्था ने अपने आरंभ से ही वैदिक सिद्धांतों – सत्य, अहिंसा, सेवा और परोपकार को आधार बनाकर समाज को जागृत करने का सतत प्रयास किया है। आर्य समाज द्वारा नियमित रूप से यज्ञ, सत्संग, वेद प्रचार एवं संस्कारों का आयोजन किया जाता रहा है, जिससे जनमानस में नैतिकता और आध्यात्मिकता का विकास हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में भी संस्था ने विशेष योगदान देते हुए निर्धन एवं जरूरतमंद बच्चों को शिक्षित करने, पुस्तक वितरण तथा नैतिक शिक्षा के प्रसार

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर चिकित्सा शिविर, रक्तदान शिविर, प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत कार्य तथा सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु जनजागरण अभियान चलाए गए। नारी शिक्षा, स्वावलंबन एवं सामाजिक समानता के लिए भी संस्था निरंतर कार्यरत रही है।

आर्य समाज ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, जाति-पांति भेदभाव एवं रूढ़ियों के विरुद्ध जागरूकता फैलाकर एक स्वस्थ, शिक्षित और समरस समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह संस्था आज भी सेवा, संस्कार और राष्ट्र निर्माण के अपने उद्देश्यों को दृढ़ता से आगे बढ़ा रही है।

इस अवसर पर अन्य वक्ताओं ने भी आर्य समाज के 75 वर्षों के गौरवशाली इतिहास पर प्रकाश डालते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर आर्य समाज की ओर से छात्र एवं छात्राओं को पारितोषिक देकर स्वामी

आर्यवेश जी से सम्मानित एवं उत्साहित कराया गया। विदित हो कि यहां समाज के अति गरीब परिवारों के लगभग 120 छात्र-छात्राएं अध्ययन कर रहे हैं और वे विशेष उपलब्धियों के साथ आगे बढ़ रहे हैं। इस संस्था के प्राण श्री वेद व्यास जी का इस सम्पूर्ण गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान एवं भूमिका है। श्री वेद व्यास जी का लक्ष्य है कि वे सेवा के इस कार्य को निरन्तर जारी रखेंगे और प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को जीवन में उन्नति के शिखर तक पहुंचाने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

आर्य समाज का हीरक जयंती समारोह उत्साह, अनुशासन एवं वैदिक वातावरण में अत्यंत भव्यता के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

श्री सत्यकेतु सिंह एडवोकेट ने सभी आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया तथा श्री प्रवीण आर्य प्रेस प्रवक्ता ने कार्यक्रम के समाचार प्रचारित-प्रसारित किये। पूर्वमंत्री श्री बालेश्वर त्यागी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

पृष्ठ 4 का शेष

अटौर, नंगला जिला-गाजियाबाद (उ० प्र०) में छोटे लाल गुरुकुल का हुआ शुभारम्भ

बनता है। आधुनिक गुरुकुल आज की आवश्यकताओं और भारतीय परंपरा के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं। स्वामी आर्यवेश जी का मानना है कि यदि शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल पद्धति के मूल्यों को पुनः स्थापित किया जाए, तो समाज अधिक संस्कारित, सक्षम और आत्मनिर्भर बन सकता है। स्वामी जी ने कहा कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस गुरुकुल के संचालकों द्वारा इस बात का विशेष ध्यान रखा जायेगा जिससे गुरुकुल की अपनी मर्यादा बनी रहे। आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ यदि गुरुकुल के परम्पराओं का पालन किया जायेगा तो निश्चित रूप से इस गुरुकुल के पढ़े बालक राष्ट्र की प्रगति में अपना अमूल्य

योगदान देने के साथ-साथ अपने संस्कारों को भी बनाये रखने में सक्षम हो सकेंगे। इस गुरुकुल की उन्नति के लिए मैं समस्त आर्य जगत की ओर से शुभकामनाएं देता हूँ कि यह गुरुकुल निरन्तर उन्नति करे और वैदिक मान्यताओं को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दे।

समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ जिसके ब्रह्मा का पद प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका कुमारी अंजलि आर्या ने सुशोभित किया। अन्तरराष्ट्रीय स्तर के गायक एवं कथावाचक श्री कुलदीप आर्य एवं श्री वेदपाल वैदिक के भजनों का भी कार्यक्रम प्रभावशाली रहा। इनके अतिरिक्त जिला सभा के मंत्री श्री

सत्यवीर चौधरी, कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र पांचाल, श्री हरवीर सिंह सुमन-मेरठ, श्री बृजपाल तेवतिया आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। सभी आगन्तुक अतिथियों का स्मृति चिन्ह एवं शॉल देकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक श्री कृष्णपाल सिंह आर्य और गुरुकुल के संरक्षक श्री रामपाल सिंह आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

मंच का संचालन आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के उपप्रधान श्री कृष्णदेव आर्य ने कुशलता के साथ निभाया। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ 5 का शेष

वैदिक यज्ञ समिति, धनौरा (टीकरी) बागपत द्वारा आयोजित आर्य महासम्मेलन में....

विश्वराज आर्य, श्री संजीव फौजी, श्री विनोद जी, श्री देवेन्द्र प्रधान, श्री यशपाल जी (मेरठ), श्री मनोज जी (दिल्ली), श्री राजू जी, श्री सुक्रमपाल जी, श्री संजीव जी, श्री गौरव जी, श्री अनुज जी, श्री उधम डी.पी., श्री अनिल जी आदि ने श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ अर्पित की।

इस तीन दिवसीय आयोजन को सफल बनाने में जिन कार्यकर्ताओं ने अपना विशेष योगदान दिया उनके नाम उल्लेखनीय हैं सर्वश्री अमरीश आर्य, मनीष, मंटू, कृष्ण, उत्तम (काला), गोल्डी, विपुल, अनी, निशांत, प्रशांत, देव, मनुज, सुपेंद,

संजू आदि।

स्वागत समिति के प्रमुख सदस्य सर्वश्री सोहनवीर फौजी, लेखचंद जी, अमित मास्टर, श्रीपाल (गुड्डा), रजनीश जी, प्रमोद जी, यशपाल जी, बिजेंद्र मास्टर, मास्टर मनोज, राज सिंह जी, महक सिंह प्रधान, सोहनद्रपाल जी, अरुण नेता जी, देवेन्द्र नेता जी, संदीप ठेकेदार, मनोज पटवारी, गुलबीर सिंह, बीरसेन जी, चौधरी हरपाल जी, तेजपाल नेता जी (पूर्व जिला पंचायत सदस्य), प्रवीण जी, लोकिन्द्र जी, रविंद्र फौजी, सचिन कोच, विनोद जी, धर्मपाल जी, जल सिंह आर्य, जगपाल सहरावत, धीरज मास्टर, मिंटू सहरावत,

रणवीर जी आदि ने अथक परिश्रम एवं समर्पण से आगंतुक संन्यासियों, विद्वानों एवं आर्यजनों का स्वागत-सत्कार कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम उत्साह, अनुशासन एवं वैदिक वातावरण में अत्यंत भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। आयोजन के संरक्षक श्री प्रेम सिंह वैद्यवान का विशेष सहयोग रहा और श्री अंकित शास्त्री ने कार्यक्रम का विशेष संयोजन किया। कार्यक्रम में अनेक गांवों के गणमान्य लोग भी निरन्तर सम्मिलित होते रहे।

पृष्ठ 5 का शेष

श्री संजीव नरूला एवं श्रीमती नीरज नरूला परिवार के निवास स्थान 13 8, मॉडल कॉलोनी, यमुनानगर में....

उत्साह के साथ भाग लिया। यज्ञ में नरूला परिवार के सभी सम्बन्धी एवं हितैषीगण भी सम्मिलित हुए।

9 अप्रैल, 2026 को सायं 4:30 से 7:00 तक तथा 10, 11, 12 अप्रैल को प्रातः 6:00 से 8:30 तक एवं सायं 4:30 से 7:00 तक निरन्तर सामावेद पारायण यज्ञ चलता रहा। दिनांक 13 अप्रैल, 2026 को प्रातः 6:30 से 10:30 तक सामवेद पारायण यज्ञ की हुई पूर्णाहुति।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सामवेद पारायण महायज्ञ के संदर्भ में अपने प्रवचनों में अत्यंत गूढ़ तथा प्रेरणादायी विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि सामवेद, चारों वेदों में विशिष्ट स्थान रखता है, क्योंकि यह मुख्यतः उपासना, स्वर और ईश्वर के प्रति भावपूर्ण समर्पण का वेद है। सामवेद का पारायण केवल

मंत्रोच्चारण भर नहीं, बल्कि वह साधना है जिसमें मन, वाणी और भाव तीनों का समन्वय आवश्यक होता है। स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि सामवेद पारायण महायज्ञ का उद्देश्य केवल अनुष्ठानिक क्रिया करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के आंतरिक जीवन को शुद्ध, सात्विक और ईश्वरमुखी बनाना है। जब साधक सामवेद के मंत्रों का उच्चारण करता है, तो उसमें स्वर की मधुरता और भावना की पवित्रता का विशेष महत्त्व होता है। यही कारण है कि सामवेद को “संगीत का मूल” भी कहा गया है, क्योंकि इसके मंत्रों का गान मन और वातावरण दोनों को पवित्र करता है। उन्होंने बताया कि सामवेद पारायण के समय उच्चारित होने वाले मंत्र न केवल वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं, बल्कि साधक के

अंतःकरण को भी निर्मल बनाते हैं। यह प्रक्रिया व्यक्ति को मानसिक शांति, आत्मिक संतुलन तथा ईश्वर के समीप ले जाती है। स्वामी जी के अनुसार, जब मनुष्य श्रद्धा, एकाग्रता और समर्पण के साथ सामवेद का पारायण करता है, तब वह अपने जीवन में दिव्यता का अनुभव करने लगता है। इस महायज्ञ के आयोजन के लिए स्वामी जी ने नरूला परिवार की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि यह परिवार सही मायने में यज्ञीय जीवन जी रहा है। नरूला परिवार सदैव आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए प्राणपण से आगे रहता है।

यह पांच दिवसीय सामवेद पारायण महायज्ञ भव्यता के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें



आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :-
www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटारें -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

कुमारी कृष्टि एवं श्री सुदीप गिरि का बिना दहेज सम्पन्न हुआ विवाह संस्कार गुरुकुल परंपरा की दो पीढ़ियों का हुआ संगम

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने नव-दम्पति को दिया आशीर्वाद



हाल ही में वैदिक परंपरा की गरिमा और पवित्रता से आलोकित एक अत्यंत प्रेरणादायक एवं विशिष्ट वैवाहिक समारोह सम्पन्न हुआ, जिसने समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया। यह पावन परिणय कुमारी कृष्टि (सुपुत्री श्री केशपाल सिंह एवं श्रीमती ललिता भुल्लर) तथा श्री सुदीप गिरि (सुपुत्र श्री खगेन्द्र नाथ गिरि एवं श्रीमती प्रतिमा गिरि) के मध्य वैदिक विधि-विधान से सम्पन्न हुआ।

वर पक्ष वर्तमान में अमेरिका में निवासरत है, जहाँ उनके पूज्य पिताश्री एक प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान के रूप में अपने ज्ञान का प्रसार कर रहे हैं। इस विवाह का विशेष एवं अद्वितीय पक्ष यह रहा कि वर की माताजी कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की स्नातिका एवं गुरुकुल की संचालिका पद्मश्री आचार्या सुकामा जी की शिष्या रही हैं। अद्भुत संयोग यह भी रहा कि वधु कृष्टि भी उसी गुरुकुल की स्नातिका एवं आचार्या सुमेधा जी की शिष्या हैं। इस प्रकार यह वैवाहिक संबंध सास और बहू दोनों रूपों में गुरुकुलीय संस्कारों के दिव्य समन्वय का अनुपम उदाहरण बन गया। उल्लेखनीय है कि इस पवित्र संबंध का निर्धारण भी आचार्या सुमेधा जी के करकमलों द्वारा ही हुआ।

सम्पूर्ण विवाह वैदिक परंपरा के अनुरूप यज्ञ, वेदमंत्रों के उच्चारण एवं शुद्ध संस्कारों के साथ सम्पन्न हुआ। वातावरण में

आध्यात्मिक ऊर्जा और सात्विकता का अद्भुत संचार हुआ। हल्द्वानी से पधारे डॉ. विनय विद्यालंकार ने वैदिक संस्कारों का विधिवत् संचालन किया तथा गुरुकुल की विदुषी बहनों द्वारा किया गया वेदपाठ समारोह की गरिमा को और भी उत्कर्ष पर ले गया।

इस अवसर पर आशीर्वाद देने हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी, वैदिक विद्वान आचार्य वागीश शर्मा जी, कलकत्ता से आचार्य मधुसूदन शास्त्री जी, पानीपत से आचार्य सुश्रुत एवं आचार्य प्रशांत जी, मोहाली से मेजर विजय आर्य जी, श्री अशोक आर्य जी, 'आर्यावर्त केसरी' के संपादक, सहित अनेक विद्वानों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर वक्ताओं ने अपने प्रेरणादायक विचार भी व्यक्त किए।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने आशीर्वाचन में कहा कि यह विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि दो संस्कारित परंपराओं का दिव्य संगम है। आज के समय में जब विवाह केवल दिखावे और भौतिकता तक सीमित होते जा रहे हैं, ऐसे में यह वैदिक रीति से सम्पन्न, सादगीपूर्ण और बिना दहेज का विवाह समाज के लिए एक

आदर्श प्रस्तुत करता है। उन्होंने विशेष रूप से इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि दोनों परिवार गुरुकुल परंपरा से जुड़े हैं और वधु एवं वर दोनों ही वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के विवाह आने वाली पीढ़ियों को सही दिशा देंगे और समाज में नैतिकता, समानता एवं संस्कारों को पुनर्जीवित करने का कार्य करेंगे। अंत में उन्होंने नवदंपति को आशीर्वाद देते हुए उनके सुखमय, समृद्ध एवं आदर्श वैवाहिक जीवन की मंगलकामना की।

स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि यह विवाह एक प्रकार का सामाजिक परीक्षण भी है, जिसमें यह देखा जाएगा कि जब गुरुकुल की स्नातिका सास और बहू दोनों की भूमिका में होती हैं, तो समाज का संचालन किस प्रकार आदर्श रूप में होता है।

आचार्य वागीश शर्मा जी ने नवदंपति को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज से आप दोनों का जीवन एक-दूसरे के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक बने।

अंत में आचार्या सुमेधा जी ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए नवदम्पति को उज्ज्वल, सुखमय एवं समृद्ध वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद प्रदान किया।

आर्य समाज दुधली में वैदिक रीति से कन्या विद्यालय भवन का उद्घाटन

आर्य समाज का इतिहास सेवा, त्याग और राष्ट्रभक्ति का प्रकाशस्तंभ है - स्वामी यतीश्वरानंद

कन्या शिक्षा, संस्कार और वेदाधारित जीवन ही सशक्त समाज की नींव है - स्वामी आदित्यवेश

दुधली (मुजफ्फरनगर), आर्य समाज दुधली एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में 22 मार्च 2026 को ग्राम दुधली में एक भव्य, गरिमामय एवं वैदिक मर्यादाओं से ओत-प्रोत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पावन अवसर पर सरदार सिंह स्मृति कन्या विद्यालय के नवीन भवन का उद्घाटन वैदिक मंत्रोच्चारण, यज्ञ एवं ईश स्तुति-प्रार्थना के साथ विधिवत् सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सैकड़ों आर्यजन उपस्थित रहे और सम्पूर्ण वातावरण वेद मंत्रों की दिव्य ध्वनि, यज्ञ की पवित्र सुगंध तथा राष्ट्रोत्थान के उत्साह से अनुप्राणित रहा। इस अवसर पर स्वामी यतीश्वरानंद (पूर्व मंत्री, उत्तराखंड), स्वामी आदित्यवेश (राष्ट्रीय महासचिव, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद), विधायक श्री पंकज मलिक, स्वामी महानन्द (शुक्रताल), श्री हरिओम त्यागी, श्री अनूप सिंह राठी, श्री मुकेश आर्य, श्री धर्मेश आर्य, श्री अवनीश आर्य, श्री संजीव आर्य, पूर्व सांसद श्री सहनवीर सिंह, स्वामी भजनानंद जी, श्री राजीव कुमार सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभी अतिथियों ने यज्ञ में आहुति देकर तथा वैदिक रीति से फीता उद्घाटन कर इस ऐतिहासिक क्षण को स्मरणीय बनाया।



अपने उद्बोधन में स्वामी यतीश्वरानंद ने कहा कि आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास वेदों के प्रकाश में समाज सुधार, सेवा, त्याग और राष्ट्रभक्ति का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने कहा कि जब समाज वेदों के सिद्धांतों - सत्य, अहिंसा, सदाचार और परोपकारकृप पर चलता है, तब राष्ट्र सशक्त बनता है।

स्वामी आदित्यवेश ने अपने प्रेरक संबोधन में कहा कि कन्या शिक्षा केवल ज्ञान का प्रसार नहीं, बल्कि संस्कार, आत्मबल और राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। उन्होंने आर्य

समाज के स्वतंत्रता संग्राम, हैदराबाद आंदोलन तथा नारी शिक्षा में योगदान को स्मरण करते हुए युवाओं से नशामुक्ति, कुरीतियों के उन्मूलन, मातृशक्ति के सम्मान एवं वेद प्रचार के लिए समर्पित होने का आह्वान किया।

विधायक श्री पंकज मलिक ने कहा कि दुधली जैसे ऐतिहासिक ग्राम में कन्या शिक्षा के इस नवीन केंद्र की स्थापना क्षेत्र के सामाजिक एवं शैक्षिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगा।

उल्लेखनीय है कि आर्य समाज दुधली की स्थापना वर्ष 1901 में हुई थी। वर्ष 1930 में यहां कन्या पाठशाला की स्थापना कर नारी शिक्षा का पवित्र दीप प्रज्वलित किया गया, जो आज एक वटवृक्ष के रूप में विकसित हो रहा है। स्वतंत्रता संग्राम एवं हैदराबाद आंदोलन में भी दुधली के आर्यजनों ने अग्रणी भूमिका निभाई और अनेक वीरों ने राष्ट्रहित में अपने प्राणों का बलिदान दिया।

यह आयोजन वैदिक परंपराओं, यज्ञीय संस्कृति एवं आर्य समाज के आदर्शों को पुनर्जीवित करते हुए समाज को शिक्षा, संस्कार, स्वावलंबन और राष्ट्रभक्ति के मार्ग पर अग्रसर करने वाला सिद्ध हुआ।

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलटू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)

सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतेक्यता होना अनिवार्य नहीं है।